श्रीपिल्लई लोकाचार्य का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व

भावना शुक्ला

विशिष्टाद्वैतवेदान्त की परम्परा में रामानुजाचार्य के बाद श्रीपिल्लई लोकाचार्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्रीलोकाचार्य न केवल उद्भट दार्शनिक थे अपितु भाष्यकार रामानुजाचार्य के आचार्य परम्परा के संवाहक भी थे। वस्तुतः रामानुजाचार्य के पश्चात् विशिष्टाद्वैतवेदान्त की मन्दाकिनी दो रूपों में प्रवाहित हो गई। उनमें से एक का प्रतिनिधित्व श्रीपिल्लै लोकाचार्य ने किया, तथा इनके द्वारा प्रवर्तित मत टैंकले के नाम से विश्रुत हुआ तथा दूसरे मत का प्रतिनिधित्व आचार्य वेंकटनाथ, जिन्हें परवर्ती आचार्य वेदान्तदेशिक(1269ई0–1369ई0), वेदान्ताचार्य तथा कवि सिंह तार्किक भी कहते हैं, इनके द्वारा प्रवर्तित मत बड़गलै के नाम से जाना जाता है। श्रीपिल्लई लोकाचार्य का अपने समकालीन आचार्य वेंकटनाथ से प्रपत्ति के अर्थबोध के विषय में मतभेद था। यही कारण था कि विशिष्टाद्वैतवेदान्त में दो पृथक् मत टैंकले तथा बड़गले स्थापित हुए तथा आजकल लोकभाषा पर अधिक पक्षपात होने के कारण दक्षिण भारत में टैंकले मत पर विशेष आग्रह दृष्टिगोचर हो रहा है।